नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रेवड़ियों की राजनीति और वित्तीय अनुशासन की चुनौती

लोकतंत्र में जनकल्याणकारी योजनाएं सरकारों की जिम्मेदारी हैं, लेकिन जब कल्याण और चुनावी लाभ के बीच की रेखा धुंधली होने लगे तो उसका असर केवल सरकारी खजाने पर नहीं, बल्कि भविष्य की विकास यात्रा पर भी पड़ता है. भारतीय रिजर्व बैंक की ताजा स्टेट फाइनेंस रिपोर्ट इसी गंभीर चुनौती की ओर ध्यान आकर्षित करती है.

रिपोर्ट के अनुसार राज्यों का सकल वित्तीय घाटा, जो वर्ष 2017 से 2024 तक सामान्यतः 3 प्रतिशत से नीचे रहा, चालू वित्त वर्ष में बढ़कर 3.3 प्रतिशत तक पहुंचने का अनुमान है. यह संकेत है कि कई राज्य अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिए दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता को दांव पर लगा रहे हैं. पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न राज्यों ने प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण (कैश ट्रांसफर) आधारित योजनाओं का तेजी से विस्तार किया है. मध्यप्रदेश की लाडली बहना, झारखंड की मइयां सम्मान और हरियाणा की लाडो लक्ष्मी जैसी योजनाओं ने लाखों परिवारों को तत्काल राहत अवश्य दी है. गरीब और कमजोर वर्गों के लिए आर्थिक सहायता की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता. समस्या तब उत्पन्न होती है जब ऐसी योजनाएं स्थायी आर्थिक सुधारों के बजाय चुनावी प्रतिस्पर्धा का माध्यम बन जाती हैं और उनके लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था नहीं होती.

रिपोर्ट यह भी बताती है कि कई राज्यों का सार्वजनिक कर्ज लगातार बढ़ रहा है. पंजाब और हिमाचल प्रदेश में यह पहले ही सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 40 प्रतिशत के आसपास पहुंच चुका है, जबकि राजस्थान भी इसी स्तर की ओर बढ़ रहा है. केरल का कर्ज भी चिंताजनक है. ऐसे हालात में ब्याज भुगतान और वेतन-पेंशन जैसे गैर-विकास व्यय का बोझ बढ़ता है, जिससे सड़क, सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे जैसे उत्पादक क्षेत्रों में निवेश सीमित हो जाता है. इसका सीधा असर रोजगार सृजन और आर्थिक विकास पर पड़ता है. मध्यप्रदेश जैसे राज्यों के लिए यह चेतावनी विशेष महत्व रखती है. राज्य ने सामाजिक सुरक्षा की कई महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू की हैं, लेकिन इनके साथ राजस्व बढ़ाने, निवेश आकर्षित करने और उद्योगों को प्रोत्साहन देने की रणनीति भी समानांतर चलनी चाहिए. केवल कर्ज लेकर कल्याणकारी योजनाओं का विस्तार करना लंबे समय में वित्तीय संकट को जन्म दे सकता है.

यह भी ध्यान रखना होगा कि सभी नकद हस्तांतरण योजनाएं स्वभावतः गलत नहीं हैं. यदि वे स्पष्ट पात्रता, पारदर्शी व्यवस्था और वित्तीय क्षमता के अनुरूप लागू हों तो गरीबी उन्मूलन और सामाजिक सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं. किंतु बिना वित्तीय अनुशासन के अंधाधुंध विस्तार भविष्य की पीढ़ियों पर कर्ज का बोझ बढ़ा देता है.आवश्यकता इस बात की है कि राज्य सरकारें लोक-लुभावन घोषणाओं और दीर्घकालिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करें. चुनावी वादों का मूल्यांकन उनकी वित्तीय व्यवहार्यता के आधार पर भी होना चाहिए. साथ ही, कर संग्रह बढ़ाने, निवेश को प्रोत्साहित करने, गैर-जरूरी खर्चों पर नियंत्रण रखने और पूंजीगत निवेश को प्राथमिकता देने की नीति अपनानी होगी.

लोककल्याण किसी भी लोकतांत्रिक सरकार का मूल दायित्व है, लेकिन उसका आधार मजबूत अर्थव्यवस्था ही हो सकती है. यदि आज वित्तीय अनुशासन की अनदेखी की गई तो कल विकास, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा,तीनों पर संकट गहरा सकता है. इसलिए राज्यों को अल्पकालिक राजनीतिक लाभ से ऊपर उठकर दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी.

जीडीपी में महिलाओं के अवैतनिक श्रम का सच

डॉ ममता वर्मा
पीएचडी पब्लिक हेल्थ टाटा सामाजिक संस्थान मुंबई

> हमें कानून और श्रम के नियमों को पालन भी करना है और करवाना होगा .समान कार्य के लिए समान वेतन की आवश्यकता है .श्रम में लिंग भेद को ख़त्म करना होगा .हमें जन जागरण की एक मुहिम चलानी होगी ताकि आम जानता पुरुषों को रसोई घर में खाना बनाते ,बच्चों की देखभाल करते हुए ,और घरेलू काम करते देख कर सहज महसूस करे . केयर इकॉनमी एक उभरता हुआ इन्वेस्टमेंट है जो किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का मजबूत कर सकता है. घरेलू कार्य का उत्तरदायित्व हमारी सामुदायिक जवाबदेही है जैसे शरीर को स्वस्थ रखने में प्रत्येक अंग का योगदान होता हैं इसी तर्ज पर देखरेख में भी पुरुष महिलाओं लड़को और लड़कियों को भागीदारी करनी होगी. समानता विचार के साथ साथ व्यवहार में भी आनी चाहिए

आप सुबह से शाम तक ऑफिस का काम कर के अपने घर लौटते हैं और घर के दरवाज़े पर एक बिल चस्पा करा हुआ पाते हैं जब आप आश्चर्य से बिल को पढ़ना शुरू करते हैं बिल का भुगतान बिंदु कुछ ऐसे होते है सबका खाना बड्डुनाना ,गंदे घर को साफ़ रखना,सबके मैले कपड़े धोना ,साफ़ कपड़ों को वापस ज़माना, बच्चों को तैयार कर स्कूल भेजना ,बाज़ार से रोज का समान ख़रीद के लाना ,घर में आने वालो महमानों का चाय नाशता जुटाना,पालतू पशुओ का ख़याल रखना ,घर के पोधों में पानी देना ,घर के बच्चों और वृद्धों की देखभाल करना और अनगिनत घर के काम खत्म करना साथ ही सामुदायिक जिम्मेदारी निभाना . इन तमाम घरेलू कामों का आज का देय बिल रुपए 2000/है अर्थात् महीने भर के देय बिल होगा रुपये 60.000/- इस बिल पर फिलहाल कोई टैक्स नहीं लगाया है ,बिल के आखिरी में लिखा होता है अवैतनिक श्रम का बिल और हस्ताक्षर करता होती है घर कीं ग्रहणीं.

यह अनोखा अवैतनिक श्रम का बिल और उसका भुगतान विवरण पढ़कर आप मुस्कुराए ,और समझ जाते हैं कि ये घर की ग्रहणी का मज़ाक़ है . हाँ, ये मजाक सदियों से पितृ सत्ता समाज की धरोहर है जिसमे घरेलू कार्य की कोई कीमत नहीं . यू एन वुमन संस्था के अनुसार संसार की महिलाएँ हर दिन 16 बिलियन घंटे अवैतनिक श्रम (घरेलू कार्य) करती है.यह जानते हुए भी की अगर घर का कार्य सही समय पर नहीं किया जाए तो आप बाहरी ऑफिस काम कुशलता से नहीं कर पाएंगे. समाज और देश की रफ़्तार थम जाएगी फिर भी घरेलू काम की क़ीमत आकलन की अवहेलना सदियों से हो रही है.

सन 1960 के बाद से कुछ फेमिनिस्ट इकोनॉमिस्ट ने माँग रखी कि अवैतनिक श्रम (अनपेड लेबर)को अर्थव्यवस्था का हिस्सा माना जाए और गृहणियों द्वार किए जाने वाले अदृश्य अवैतनिक श्रम को आर्थिक तंत्र से पृथक ना रखा जाये . सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इकॉनमी की हालिया रिपोर्ट 2019-2023 रिपोर्ट बताती है कि अवैतनिक श्रम करने का भार पुरुषों की तुलना में महिलाओं पर कई गुना अधिक होता है .घरेलू महिला हर दिन क़रीब सात घंटे अवैतनिक श्रम घर के काम करती है वही बेरोजगार पुरुष केवल चार घंटे ही गृह कार्य में लगते हैं . काम काजी महिलाएं घर के अवैतनिक श्रम और भारी पड़ता है ये महिलाएं औसत अपनी नौकरी पेशा के साथ साथ घर को अवैतनिक श्रम करने में 5.8 घंटें लगाती है वही नौकरीपेशा पुरुष घर कार्य करने 2.7 घंटें ही लगाते हैं.

भारत की अर्थव्यवस्था को सुधार करने के लिए महिलाओं के श्रम योगदान 33.9 ब्र है इस आंकड़े में दूरस्थ गाँव की वो सारी महिलाएं शामिल नहीं है जो दिहाड़ी मज़दूरी का काम करती है या निम्न स्तर के स्वयं व्यावसायिक को करती है. स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की रिपोर्ट 2023 के अनुसार मुफ्त का श्रम हमारी अर्थव्यवस्था में 22.7 लाख करोड़ रूपयों का योगदान करता है जो की हमारे देश के जी डी पी का लगभग 7.5 प्रतिशत हिस्सा है .

माँ के हाथ का खाना घर में मुफ्त है वही खाना किसी रेस्टोरेंट में कोई बावर्ची पकायें तो महँगा हो जाता है .आइए जानते हैं की अवैतनिक श्रम के लिए जिम्मेदार कौन है? सर्वप्रथम महिलाएं स्वयं जिम्मेदार है ,जो काबिल होने के बावजूद चिड़िया बनकर सदा पिंजरे में सुरक्षित रहना पसंद करती हैं और ऐसे रहकर पितृ सत्ता के साथ अपनी उम्र गुज़र देती है. हाल ही में मैंने सोशल मीडिया पर एक रील देखी उसमें एक महिला दर्शकों से पूछती है की आप ऑफिस में कोई पी पी टी प्रेजेंटेशन बनाते हैं और आपका बॉस आपको कहें की आपने बहुत बढ़िया बनायी है इसके लिए आपको ढेर सारा धन्यवाद और आशीर्वाद तो क्या आप हर दिन इतनी ही अच्छी पी पी टी बनायेंगे ? सिर्फ़ इसलिए क्या आपको उस पे के बदले में सराहना और आशीर्वाद मिले क्या आप नहीं चाहते की आपके काम का मूल्य हो? महिलाओं को उनके हर योगदान का मूल्य देना चाहिए चाहे वो घर में हो या ऑफिस में, पितृ सत्ता,सामाजिक परिवेश खोखले रीति रिवाज के चलते सब की देखभाल की जिम्मा स्त्री और पुरुष में बराबर नहीं बाँटा .पितृ सत्ता ने साजिश के तहत भावनात्मक तरीक़े से महिलाओं पे मुफ्त के श्रम को उत्तरदायित्व थोपा है .

सारी दुनिया में व्याप्त है रिश्वतखोरी

रिश्वतखोरी ऐसी विश्वव्यापी बीमारी है, जिसकी कोई दवा नजर नहीं आती. ग्लोबल ट्रांसपेरेंसी रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका, यूरोप और एशिया में भ्रष्टाचार के मामले बढ़े हैं. नेता से लेकर प्रशासन भी इसमें लिप्त है. 26 एशियाई देशों में करप्शन के मामले में भारत 22 वें नंबर पर है. समाजसेवी अन्ना हजारे के आंदोलन से देश में भ्रष्टाचार विरोधी माहौल बनने की उम्मीद थी लेकिन कुछ विभाग आज भी रिश्वतखोरी के लिए बदनाम हैं जिनमें पीडब्ल्यूडी, एक्साइज, पुलिस व आरटीओ का समावेश है. अधिकांश सरकारी कर्मचारियों व अधिकारियों की मानसिकता ऐसी बन गई है कि ऊपरी आमदनी और कमीशन के बिना काम ही नहीं करते. पकड़े जाने और निलंबित होने की भी उन्हें शर्म नहीं है. रिश्वत को दस्तूर मान लिया गया है. नेताओं का भ्रष्टाचार करोड़ों में होता है. चुनाव टिकट देने, पार्टियों को तोड़ने और दलबदल कराने के लिए मोटी रकम का खेल होता है. जांच एजेंसियों पर दबाव रहता है कि किस पर सख्ती करें और किस पर जांच धीमी कर दें. अंतरराष्ट्रीय सौदे में कमीशन को पे-ऑफ का नाम दिया जाता है. ऐसे सौदे में दलाल अपनी भूमिका निभाते हैं. मीडिया की सुर्खियों में भ्रष्टाचार छाया रहता है, लेकिन बहुत ही कम मामलों में दोषी को सजा मिल पाती है. योजनाएं समय पर पूरी न करके उनको लटकाया जाता है ताकि लागत बढ़ जाए और पैसा खाने का मौका मिले. भ्रष्टाचार व्यक्ति की मानसिकता से जुड़ा है. मोटा वेतन-भत्ता पाने वाले भी रिश्वतखोरी करते हैं. उसे वह अपना अलिखित अधिकार समझते हैं. लालच व बेईमानी यदि किसी के चरित्र में हो तो उसका कौन सा इलाज है?

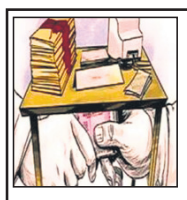

कानून में रिश्वत लेने वाले के समान रिश्वत देने वाला भी दोषी माना गया है लेकिन जब समय पर काम नहीं किया जाता, फाइल आगे नहीं बढ़ती और बार-बार चक्कर काटने की नौबत आती है तो लोग रिश्वत देने के लिए मजबूर हो जाते हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

मालवा- निमाड़ की डायरी

परमार की किरकिरी, लपेटे में मालवीय भी

संजय व्यास

आगर-मालवा के वरिष्ठ भाजपा नेता व भाजपा किसान मोर्चा आगर जिलाध्यक्ष पद की लगातार दूसरी पारी खेल रहे दिनेश परमार को पार्टी ने बड़ा झटका दिया है. हाल ही में उन्होंने भाजपा जिलाध्यक्ष ओम मालवीय के साथ जुगलबंदी कर मोर्चे की जिला कार्यकारिणी घोषित की थी. इसमें जगह मिलने से वंचित असंतुष्ट नेताओं अपनी बात जब उपर तक पहुंचाई तो खुलासा हुआ कि कार्यकारिणी में शामिल नामों पर कोई औपचारिक स्वीकृति नहीं ली गई थी. चूंकि दिनेश परमार ने अपने संदेश में लिखा था कि ये नियुक्तियां भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल और मोर्चा प्रदेश नेतृत्व की सहमति से की गई है.

इस पर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष के साथ मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष जयपाल सिंह चावड़ा गहरी नाराजगी जताई और तत्काल कार्यकारिणी रद्द करने के निर्देश दे दिए. सो भाजपा जिला अध्यक्ष ओम मालवीय ने प्रदेश नेतृत्व के निर्देशों का हवाला देते हुए भाजपा किसान मोर्चा की जिला कार्यकारिणी की घोषणा के महज छह घंटे बाद ही उसे भंग कर दिया. दोपहर घोषित की गई कार्यकारिणी शाम तक निरस्त होने से जिले के राजनीतिक गलियारों में चर्चाओं का दौर तेज हो गया. आगर-मालवा जिले में भारतीय जनता पार्टी की अंदरूनी राजनीति एक बार फिर चर्चा का विषय बन गई है.

कहीं गम, कहीं खुशी

भाजपा किसान मोर्चा की जिला कार्यकारिणी के गठन और फिर महज कुछ घंटों के भीतर उसके निरस्तीकरण ने संगठन के भीतर चल रही गुटबाजी और समन्वय की कमी को सार्वजनिक रूप से सामने ला दिया है. इस मामले से परमार की किरकिरी तो हुई ही लपेटे में ओम मालवीय भी आ गए.

भाजपा किसान मोर्चा की जिला कार्यकारिणी की सूची वायरल होते ही नव-नियुक्त पदाधिकारियों को बधाइयां देने का सिलसिला शुरु हो गया था. रात तक सूची निरस्ती की सूचना पर जहां नव-नियुक्त पदाधिकारियों की खुशियां हवा हो गई, वहीं सूची से खफा नेताओं के चेहरों पर विजयी मुस्कान नजर आने लगी.

उपेक्षा पर भड़के परिहार

सुसनेर से एकमात्र कांग्रेसी विधायक भैरू सिंह परिहार (बापू) से विगत दिनों क्षेत्र में प्रवास पर आए दिग्गज कांग्रेस नेता अजय सिंह राहुल द्वारा मिलने से इनकार कर देने से भड़के हुए हैं. वे शाजापुर आगर के दौरे पर थे. बापू ने जब उनसे मिलने की बात कही तो उन्होंने विधायकों से मिलने का उनका कोई कार्यक्रम न होने का कहकर इनकार कर दिया था. जिले में कबीलों में बटी कांग्रेस का कार्यक्रम नलखेड़ा में आयोजित किया गया. लेकिन जिले के सुसनेर से एकमात्र कांग्रेसी विधायक भैरू सिंह को इस कार्यक्रम की सूचना नहीं दी गई, जिस पर भैरू सिंह ने पार्टी में गुटबाजी का आरोप लगाते हुए चेतावनी दे दी कि यदि ऐसा ही आलम रहा तो मैं पार्टी छोड़ दूंगा. यदि भविष्य में इस तरह की गुटबाजी या कोई कार्यक्रम हुआ या 'अगर संगठन का कोई नेता बिना बताए मेरे क्षेत्र में आया तो उसको बेइज्जती का सामना करना पड़ेगा. 'उनके विधानसभा क्षेत्र में बिना सूचना दिए ब्लॉक और नगर कार्यकारिणी की बैठकें हो रही हैं, ऐसा ही चलता रहा तो कांग्रेस कहां मजबूत होगी.

निशानेबाज

कभी था इस देश में 'सास-मत' अब एनडीए का प्रचंड बहुमत

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, ऐसा क्यों है कि बहुमत की बहुत चर्चा होती है, लेकिन 'सासमत' की नहीं? अखबार में समाचार है कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार का बहुमत लगातार बढ़ता जा रहा है. संसद के बजट सत्र में एनडीए के 295 संसद सदस्य थे जो इस मानसून सत्र के समय बढ़कर 320 हो गए हैं. क्या यह मानसून की बारिश का असर है?' हमने कहा, 'मोदी-शाह का कमाल लोकतंत्र में धमाल मचा रहा है. जैसे तमाम नदियां समुद्र में जाकर मिल जाती हैं वैसे ही विपक्ष की अलग हो चुकी टूटी-बिखरी पार्टियां भी एनडीए में शामिल होती चली जा रही हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इस देश के घरों में सदियों तक सासू मां की हुकूमत चलती थी. 'सौ दिन सास के' नामक फिल्म भी बनी थी. हर मामले में सास का मत ही माना जाता था. बहू का मुंह ही नहीं खुलता था, इसलिए बहुमत का सवाल ही नहीं उठता था. सास शासन करती थी और बहू सहन करती थी. चाहें तो ललिता पवार की पुरानी

फिल्में देख लीजिए कि उस जमाने में कैसी स्थिति थी.'

हमने कहा, 'अब समय बदल गया है. परिवारों में बेटा-बहू अलग संसार बसाने लगे हैं. आज का वक्त बहू और बहुमत के साथ है. बहू जो चाहती है, वैसा होता है. हम तो यह राय देंगे कि एनडीए को बहुमत और बढ़ाना है तो केंद्र सरकार देश में लाड़ली बहू योजना शुरू कर दे.' पड़ोसी ने कहा, 'उसकी जरूरत नहीं है. जब चुनाव आयोग अपने साथ हो, केंद्रीय जांच एजेंसियों का ब्रम्हास्त्र और एसआईआर का चक्रव्यूह हो तो एनडीए का बहुमत चक्रवृद्धि ब्याज के समान बढ़ता ही चला जाएगा और विपक्ष किसी अंधेरे कोने में सिसकता नजर आएगा.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, मोदी का मैग्नेट विपक्ष के टूटे हुए दलों को अपनी ओर खींचता चला जा रहा है. इतने पर भी हम याद दिला दें कि एक समय वह भी था, जब 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने लोकसभा में 400 से ज्यादा सीटें जीत ली थीं और बीजेपी को सिर्फ 2 सीटें मिल पाई थीं. तब राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस के पास प्रचंड बहुमत था. मोदी शायद ही उतनी मेजॉरिटी जुटा पाएं! उन्हें अपने मंत्रिमंडल की पूर्व सदस्य स्मृति ईरानी की याद आती होगी जो फिर छोटे पर्दे पर लौटकर 'सास भी कभी बहू थी' में आदर्श तुलसी बहू की भूमिका निभा रही हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12325 - डॉ. सागर खादीवाला

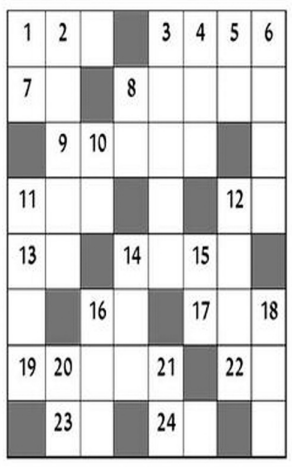

ऊपर से नीचे

1. सीना, वक्षस्थल 2. पालन-पोषण 3. कृपालु, दयालु 4. दूर करना, हटाना, जिसकी वस्तु हो उसकी इच्छा के विरुद्ध लेना (सं.) 5. स्त्री जाति का प्राणी या जीव 6. सिंह रूपी भगवान (सं.) 8. शंका, संदेह 10. जाड़ा, सर्दी, ठंडा 11. रसोई घर 12. लज्जित होना या करना 14. जाति संबंधी 15. किसी मनुष्य को किसी उद्देश्य से जानबूझकर मारना, मारण 16. नासमझ, मूर्ख 18. गलीचा, किसी काल विशेष से संबद्ध 20. संसार, जन्म, उत्पत्ति (सं.) 21. कोठरी, कमरा (सं.)

बाएं से दाएं

1. मुद्रित करना 3. अतिथि 7. शर, बाण 8. शहर का रहने वाला, शहरी 9. तंत्र-मंत्र द्वारा किसी को वश में करना 11. सभा आदि में विधिपूर्वक स्वीकृत किया गया 12. शतरंज में कोई मोहरा ऐसी जगह रखना जिससे बादशाह उसकी घात में पड़ता हो 13. बीड़ी या हुक्के का दम 14. प्राणी, पशु, मूर्ख 16. लड़की का लड़का 17. बंदूक, तोप आदि के छूटने का शब्द 19. जिससे लाभ होता हो 22. छोटा नाला, मोरी 23. जंगल 24. हानि, घाटा

Solution 12324

कं	ट	क	■	क	म	ल	र
का	■	ह	र	द	म	■	वीं
ल	च	क	■	म	ल्ल	■	द्र
■	■	शां	■	■	पु	रा	ना
वि	द्या	■	झं	का	र	■	थ
दू	■	सां	झा	■	म	रू	■
ष	■	भ	वा	नी	■	प	क्षी
क	स	र	त	■	ता	सी	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी, धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वर्ष के मध्य में आत्म विश्वास में वृद्धि होगी. नवीन योजनाओं में पूँजी निवेश होगा. वर्ष के अन्त में अत्याधिक व्यय से क्रोध में वृद्धि होगी. प्रियजनों के प्रति उदासीनता रहेगी. जायजाद के प्रति समस्याओं का समाधान होगा. विवादों से बचना चाहिये.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आत्म विश्वास में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को नवीन योजनाों में पूँजी निवेश होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को व्यय के कारण मन खिन्न रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक विवाद हो सकता है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला लंबे कद का फुर्तीला स्वाभाव का, बुद्धिमान चतुर व्यवहार कुशल होगा. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. ज्वर अतिसार, निमोनिया, आदि से 5 वर्ष की आयु तक कुछ तकलीफ होगी.बाद में स्वस्थ्य रहेगा. यात्राप्रिय एवं मनोरंजन का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

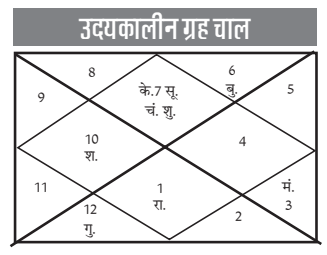

पंचांग

रा.मि. 30 संवत् 2083 आषाढ शुक्ल सप्तमीं भौमवासरे प्रातः 6/59, चित्रा नक्षत्रे रात 12/14, सिद्ध योगे रात 10/35, वणिज करणे सू.उ. 5/19, सू.अ. 6/41, चन्द्रचार कन्या दिन 11/41 से तुला, शु.रा. 7, 9,10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12,3,4,6 शुभांक- 9,2,6.

व्यापार भविष्य

आषाढ शुक्ल सप्तमीं को चित्रा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, शक्कर सरसों, सोयाबीन, पायोलिन आदि में तेजी होगी. चना, अनाज, पर नरमी रहेगी. भाग्यांक 2697 है.

मेष- कार्यक्षेत्र में चल रही उलझनें दूर होंगी. दिल की बातें अपनों से कह दें, तनाव कम होगा. कार्यों में विवेक के साथ काम लेना हितकर रहेगा. परिश्रम अधिक रहेगा.

वृषभ- भावुकता में लिये गये फैसले बदलना पड़ेंगे. श्रमसाध्य कार्यों में प्रयास करने पर सफलता मिलेगी. आमोद प्रमोद के अवसर प्राप्त होंगे.

मिथुन- नई जिम्मेदारियां आने से कार्यक्षेत्र में व्यस्तता रहेगी. शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. यश मान सम्मान कीर्ति मिलेगी.

कर्क- मन ही मन किसी बात को लेकर परेशान रहेंगे. जोखिम के कार्य में समय बर्बाद होगा. सामाजिक कार्य बनेंगे. पूज्य व्यक्ति की सलाह हितकर रहेगी.

सिंह- धार्मिक कार्यों में शामिल होने से खुशी मिलेगी. नये मित्र मिलेंगे. लाभ होगा. आर्थिक समस्या का हल होगा. किये गये प्रयास सार्थक होंगे.

कन्या- सहकर्मी आपके सीधेपन का लाभ उठाने का प्रयास करेंगे. पराक्रम में वृद्धि होगी. नये कार्यों के प्रति विशेष रूचि रहेगी. प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी.

तुला- काननी मामले में लापरवाही से नुकसान होगा. साझेदारी लाभकारी रहेगी. अनावश्यक कार्यों पर खर्च होगा. कामकाज में बाधायें आयेंगी.

वृश्चिक- व्यापारिक सौदे लाभकारी रहेंगे. मामूली बात पर दोस्तों से विवाद की संभावना है. आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी.

धनु- विरोधियों केकारण काम करने में परेशानी होगी, जीवनसाथी का साथ खुशी देगा. राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी. सामाजिक कार्यों में सहयोग मिलेगा.

मकर- महत्वपूर्ण मामले में फैसला लेने से बचेंगे. अनहोनी का भय वृषभे बढ़ने से रोकेगा. स्वास्थ्य में सुधार होगा. नवीन योजनाओं का विकास होगा.

कुम्भ- मेहमानों के कारण अपना कार्यक्रम बदलना पड़ेगा. धार्मिक आयोजन सुखद रहेंगे. अनावश्यक विवादों को टालना चाहिये.

मीन- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे. निजी कार्यों को पूरा करने में सफलता मिलेगी. शारीरिक सुख शांति तथा पारिवारिक दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा.

SUDOKU 7457

6	9			7	4		8	
	8	5	6	2			4	9
7						6		3
	3	9	5				1	
1				8				5
	6				2	9	3	
4		7						2
8	2			5	9	1	7	
	1		2	3			5	8

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू.दोकू 7456

6	5	3	9	1	7	2	8	4
9	1	8	2	6	4	3	7	5
7	4	2	5	3	8	1	9	6
3	7	1	6	9	2	4	5	8
8	6	9	1	4	5	7	2	3
5	2	4	8	7	3	9	6	1
2	9	5	4	8	1	6	3	7
4	3	6	7	5	9	8	1	2
1	8	7	3	2	6	5	4	9